Open Access
उदयगिरी - बहुभाषिक इतिहास संशोधन पत्रिका
(A Bimonthly, Refereed, & Peer Reviewed Journal of History)
Published by: AAASSHER, Mumbai, (MS) India
Journal homepage: https://udayagiri.aaassher.org/
ISSN (Online): 2583-8423
Volume 1, Issue 5, December 2023; Pages 118 – 123
DOI: 10.5281/zenodo.10072780

Original Research Article

महात्मा गांधी और नई तालीम

गांधीजी के बुनियादी शिक्षा की समीक्षा करते हुए पाठ्यचर्या निर्माण

प्रा. डॉ. सीमा बर्गट

सहायक प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा ४४२००१ महाराष्ट्र, भारत

Corresponding author E-mail: seemapandharkar223@gmail.com

Received: 12 October, 2023 | Accepted: 23 October, 2023 | Published: 26 October, 2023

सारांश

सन 1937 में महात्मा गांधी ने वर्धा योजना शुरू की। इसको बुनियादी शिक्षा या नई तालीम के नाम से भी जाना जाता है। बुनियादी शिक्षा का तात्पर्य शिक्षा की उच्च प्रणाली से है जिससे बालक शिक्षा को प्राप्त करके आत्मनिर्भर बन सके, स्वावलंबी बन सके तथा अपने जीवन को चलाने हेतु कुछ उपार्जन कर सके।बूनियादी शिक्षा का तात्पर्य शिक्षा की उसे प्रणाली से है जिसमें विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्पों का प्रशिक्षण प्रदान करते हुए बालकों का शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास करना है और इसमें शिक्षा को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जाता है।वर्तमान में दशकों के बाद, भारत को एक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति मिली। नई शिक्षा नीति 2020, आधुनिक शैषिक विचारधाराओं और विचार प्रक्रिया के कई पहलुओं के आलावा शिक्षा पर गाँधीवादी विचारों की याद दिलाती है। गांधीजी एक ऐसे प्रयोगवादी थे, जिन्होंने जीवन भर सत्य का साथ दिया। वह प्राचीन संस्कृति से अधिक प्रभावित थे। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बहुभाषावाद और भाषा, जीवन कौशल, नैतिकता और मानव संवैधानिक मूल्यों, रचनात्मकता और महत्वपूर्ण सोच, समग्रशिक्षा आदि की शक्ति को बढ़ाने की क्षमता है।

संकेत शब्द: बुनियादी शिक्षा, नई तालीम, आत्मनिर्भर, स्वावलंबी, जीवन कौशल

बुनियादी शिक्षा : वर्धा शिक्षा सम्मेलन सन 1937 में गांधीजी वर्धा में थे।वहां के मारवाड़ी हाई स्कूल (वर्तमान नवभारत स्कूल) की रजत जयंती का समारोह 22 तथा 23 अक्टूबर 1937 को होने वाला था उस अवसर पर भारत के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्रियों, राष्ट्रीय नेताओं तथा समाज सुधारकों को आमंत्रित किया गया एवं "**अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन**" (All India National Education Conference) का गांधी जी के सभापतित्व में आयोजन किया गया। इसी सम्मेलन को

"**वर्धा शिक्षा सम्मेलन**" Wardha Education Conference भी कहा जाता है ।सम्मेलन में उपस्थित व्यक्तियों के समक्ष महात्मा गांधी ने बेसिक शिक्षा की अपनी नई योजना प्रस्तुत करते हुए कहा "देश की वर्तमान शिक्षा पद्धति किसी भी तरह की जरूरत को पूरा नहीं कर सकती इस शिक्षा द्वारा जो भी लाभ होता है उसमें , देश का कर देने वाला मुख्य वर्ग संचित रह जाता है तथा शिक्षा का पाठ्यक्रम कम से कम 7 साल का हो जिसके द्वारा मैट्रिक तक का ज्ञान दिया जा सके लेकिन इसमें अंग्रेजी के स्थान पर कोई अच्छा उद्योग जोड़ दिया जाए ।

सर्वोतोपरी या चहुमुखी विकास के उद्देश्य से सारी शिक्षा जहां हो सके, किसी उद्योग के द्वारा दी जाए । जिससे पढ़ाई का खर्चा भी अदा हो सके ।

जरूरी यह है कि सरकार उन बनाई हुई चीजों को राज्य द्वारा निश्चित की गई कीमत पर खरीद ले । इस प्रकार गांधी जी ने मैट्रिक के स्तर तक अंग्रेजी रहित, उद्योग पर आधारित और मातृभाषा द्वारा 7 वर्ष की स्वावलंबी बेसिक शिक्षा योजना पेश की । तत्पश्चात सम्मेलन में भाग लेने वाले शिक्षा विचारदों ने गांधी जी की योजना पर विचार विमर्श करने की निम्न प्रस्ताव पास किये ...

1. इस सम्मेलन की राय में राष्ट्र के सब बच्चों को 7 वर्ष तक निशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा दी जानी चाहिए।
2. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए ।
3. सात वर्ष की संपूर्ण अवधि में शिक्षा का मध्य बिंदु किसी प्रकार का हस्तशिल्प होना चाहिए। जिससे कुछ मुनाफा हो सके ।
4. बच्चों को जो भी शिक्षा दी जाए वह केंद्रीय हस्तशिल्प से संबंधित होनी चाहिए तथा उसका चुनाव बच्चों के वातावरण को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए ।
5. सम्मेलन यह आशा करता है कि, इस पद्धति से धीरे-धीरे अध्यापक के वेतन का व्यय निकल जाएगा ।

वर्धा योजना की रूपरेखा

"वर्धा योजना" या "बेसिक शिक्षा योजना" की रूपरेखा इस तरह है ।

1. बेसिक शिक्षा के पाठ्यक्रम की अवधि 7 वर्ष की है ।
2. यह शिक्षा 7 से 14 वर्ष तक के बालकों तथा बालिकाओं हेतु नि:शुल्क एवं अनिवार्य है ।
3. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा है।
4. पाठ्यक्रम में अंग्रेजी का कोई स्थान नहीं ।
5. सम्पूर्ण शिक्षा का संबंध किसी आधारभूत शिल्प से है ।
6. अच्छे शिल्प को बालकों की योग्यता तथा स्थान की जरूरत को ध्यान में रखकर चुना जाता है ।
7. चुने हुए शिल्प की शिक्षा इस तरह दी जाती है यह बालकों को अच्छी शिल्पी बनाकर उसको स्वावलंबी बना देती है ।
8. उक्त शिल्प की शिक्षा इस तरह प्रदान की जाती है कि बालक उसके सामाजिक तथा वैज्ञानिक महत्व से भली-भांति परिचित हो जाते हैं ।
9. शारीरिक श्रम पर बल दिया जाता है । जिससे बालक सीखे हुए शिल्प के द्वारा अपनी जीविका का उपार्जन कर सके ।
10. शिक्षा का बालक के जीवन, गृह तथा ग्राम से उसके ग्राम के उद्योगों, हस्तशिल्पों तथा व्यवसाय से घनिष्ट संबंध होता है । बालकों द्वारा बनाए जाने वाली वस्तुएं ऐसी होती है जिनका प्रयोग किया जा सकता है अथवा जिनको बेचकर विद्यालय का कुछ व्यय चलाया जा सकता है ।

इस तरह बेसिक शिक्षा की योजना में महात्मा गांधीजी की शिक्षा दर्शन के प्रमुख तत्वों का समावेश है ।

बुनियादी शिक्षा या नई तालीम की प्रमुख बातें एवं समीक्षा

बुनियादी शिक्षा या नई तालीम का मुख्य उद्देश व्यक्तिगत विकास और सामाजिक विकास है |

1. **क्रिया प्रधान शिक्षा**: बुनियादी शिक्षा क्रिया प्रधान है क्योंकि, इसमें संपूर्ण ज्ञान का आधार अनुभव माना जाता है ।
2. **बालक प्रधान शिक्षा**: बुनियादी शिक्षा बालक प्रधान है इसमें बालक को शिक्षा का ग्राहक समझा जाता है ।अतः उसकी आवश्यकताओं का अध्ययन किया जाता है तथा उनको पूर्ण करने का प्रयास किया जाता है । डॉ. एस.एन. मुखर्जी के शब्दों में नई तालीम बाल केंद्रीत शिक्षा है तथा बालक क्रिया द्वारा ज्ञान का आयोजन करता है ।
3. **गृह स्कूल तथा समाज में सामंजस्य**: बुनियादी शिक्षा ग्रह स्कूल तथा समाज के जीवन में पूर्ण सामंजस्य स्थापित करती है इसका कारण बताते हुए रायबर्ण ने लिखा है "बालक हस्तशिल्प की शिक्षा प्राप्त करके अपने को गृह स्कूल तथा समाज में प्राय: समान वातावरण में पाता है ।
4. **आर्थिक आधार**: बुनियादी शिक्षा का आधार आर्थिक है इसके समर्थन में दो तर्क उपस्थित किये जा सकते हैं।
    i. बुनियादी विद्यालयों में बालकों द्वारा बनाई जाने वाली वस्तुओं को बेचने से विद्यालय का कुछ व्यय निकल सकता है ।
    ii. बालक किसी हस्तशिल्प को सीख कर अपने भावी जीवन को में धन का अर्जन कर सकता है एक अन्य तर्क डॉ एस एन मुखर्जी से मुखर्जी ने किया बुनियादी शिक्षा का प्रयोजन बेरोजगारी समस्या का समाधान करता है ।
5. **सामाजिक आधार**: बुनियादी शिक्षा का आधार सामाजिक है क्योंकि, इसमें बालक के कई सामाजिक गुणों को विकसित करने की चेष्टा की जाती है ।बालक में हस्तशिल्प के माध्यम से सेवा तथा स्नेह, सहयोग एवं सहिष्णुता, आत्म संयम और आत्मविश्वास के गुणों को सुविकसित करने का पूरा-पूरा प्रयास किया जाता है ।
6. **मनोवैज्ञानिक आधार**: बुनियादी शिक्षा का आधार मनोवैज्ञानिक है क्योंकि, इसमें बालक को प्रधानता दी जाती है ना कि उसके द्वारा अध्ययन किए जाने वाले पाठ्य विषयों को । बालक का स्वाभाविक विकास किसी कार्य में संलग्न होकर ही हो सकता है । इस मनोवैज्ञानिक तथ्यों को ध्यान में रखकर बुनियादी शिक्षा में हस्तशिल्प द्वारा उत्पादक कार्य को प्रधान स्थान दिया गया है ।
7. **शारीरिक श्रम का सम्मान**: बुनियादी शिक्षा बालक में शारीरिक श्रम के प्रति सम्मान की भावना का निर्माण करती है ।बालक स्वयं हस्तशिल्प के माध्यम से किसी उत्पादक कार्य को करता है । अतः वह शारीरिक श्रम को महत्व देने लगता है तथा इस तरह का श्रम करने वाले व्यक्तियों को आदर की दृष्टि से देखने लगता है ।
8. **समवायी शिक्षण विधि**: बुनियादी शिक्षा में समवायी शिक्षण विधि का प्रयोग किया जाता है।बालक को समस्त विषयों की शिक्षा किसी कार्य अथवा हस्तशिल्प के माध्यम से दी जाती है । दूसरे शब्दों में उसे क्रिया के द्वारा ज्ञान प्रदान किया जाता है । वह कृषि, कताई, बुनाई, काष्ठ कला आदि में से किसी हस्तशिल्प का चयन करता है उसके बाद वह उस कार्य को करके उसका तथा उससे संबंधित कार्यों का ज्ञान प्राप्त करता है ।

बुनियादी शिक्षा का पाठ्यक्रम (Curriculum of basic Education)

शिक्षा के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विषय निर्धारित किए गए हैं ..

1. आधारभूत शिल्प अग्रांकित शिल्पों में से कोई एक
    i. कृषि
    ii. कताई, बुनाई

iii. लकड़ी का काम
iv. चमड़े का काम
v. मिट्टी का काम (खिलौने और बर्तन बनाना)
vi. पुस्तक का काम (कागज और कार्डबोर्ड का काम)
vii. मछली पालन
viii. फल और सब्जी की बागवानी
ix. गृह विज्ञान (केवल बालिकाओं के लिए)
x. स्थानीय और भौगोलिक आवश्यकताओं के अनुकूल कोई अन्य उपयुक्त और शिक्षाप्रद हस्तशिल्प

2. मातृभाषा
3. गणित
4. सामाजिक अध्ययन (इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र)
5. सामान्य विज्ञान - प्रकृति अध्ययन, वनस्पति विज्ञान, जीव विज्ञान, रसायन शास्त्र, स्वास्थ्य विज्ञान नक्षत्र का ज्ञान, महान अन्वेषण और वैज्ञानिकों की कहानीयां
6. कला - संगीत और चित्रकला
7. हिंदी जहां यह मातृभाषा नहीं है
8. शारीरिक शिक्षा व्यायाम और खेलकूद

बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम की विशेषताएं (Charecterstic of Basic Education)

- एक पांचवी कक्षा तक सह शिक्षा है और बालकों एवं बालिकाओं के लिए समान पाठ्यक्रम है।
- पांचवी कक्षा के पश्चात बालकों और बालिकाओं के लिए पृथक विद्यालय की व्यवस्था है।
- छठवीं और सातवीं कक्षाओं में बालिकाएं आधारभूत शिल्प के स्थान पर गृह विज्ञान ले सकती है
- चार सातवीं एवं आठवीं कक्षा में संस्कृत, वाणिज्य, आधुनिक भारतीय भाषाओं आदि की शिक्षा व्यवस्था।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा है पर राष्ट्रभाषा हिंदी का अध्ययन सब बालकों और बालिकाओं के लिए अनिवार्य है।
- पाठ्यक्रम का स्तर वर्तमान मैट्रिक के समकक्ष हैं।
- पाठ्यक्रम में अंग्रेजी और धर्म का कोई स्थान नहीं है।

अपनी योजना में धर्म को स्थान न देने का कारण बताते हुए महात्मा गांधी ने लिखा है कि, "हमारी वर्धा शिक्षा योजना में से धार्मिक शिक्षा का बहिष्कार कर दिया गया है क्योंकि, हमें भय है कि आज जिन धर्म की शिक्षा दी जाती है अथवा पालन किया जाता है वह मेल के स्थान पर झगड़ा उत्पन्न करते हैं साथ ही मेरा विश्वास है कि बच्चों को ऐसी शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिए जिसमें सभी मुख्य धर्म का सार निहित हो। धर्म का यह असर केवल शब्दों और पुस्तकों से नहीं पढ़ाया जा सकता इसे तो बालक केवल शिक्षक की दैनिक जीवनचार्य से ही सीख सकता है।

बुनियादी शिक्षा की समय सारणी बुनियादी विद्यालयों में प्रतिदिन 5 घंटे का कार्य होता है और अग्रांकित समय सारणी का अनुसरण किया जाता है।

विषय	समय
आधारभूत शिल्प	3 घंटे.
मातृभाषा	40 मि.
संगीत, चित्रकला और गणित	30 मि.
सामाजिक अध्ययन और सामान्य विज्ञान	30 मि.
शारीरिक शिक्षा	10 मि.
अवकाश	10 मि.
	कुल 5 घंटे

टिप्पणी: प्रत्येक बुनियादी विद्यालय से 1 वर्ष में 288 दिन कार्य करने की आशा की जाती है।

समय सारणी एवं समन्वय की योजना

बुनियादी शिक्षा में अध्यापन की समय सारणी इस प्रकार है केंद्रीय हस्तकला के लिए 3 घंटे संगीत, चित्रकला, गणित के लिए 40 मि. मातृभाषा के लिए 40 मि. सामाजिक अध्ययन और सामान्य विज्ञान के लिए 30 मि. शारीरिक प्रशिक्षण के लिए 10 मि. मध्य अवकाश के लिए 10 मि. निर्धारित किए गए थे। **शिक्षा में समन्वय को निर्धारित क्रियान्वित करने के लिए कुछ बातों को ध्यान रखना आवश्यक माना गया जो निम्न था।**

- **योजना बनाना**: अध्यापक और विद्यार्थियों को मिलकर कक्षा के अनुसार पूरे वर्ष की शिक्षा की योजना बना लेनी चाहिए और उसे त्रैमासिक, मासिक, साप्ताहिक तथा दैनिक कार्यों में विभाजित कर देना चाहिए।
- **उपकरणों की व्यवस्था** : योजना बना लेने के पश्चात उसके लिए आवश्यक उपकरण जैसे मूल हस्त कौशल के लिए आवश्यक कच्चा माल और यंत्र आदि जुटाए जाना चाहिए।
- **कार्यान्वित करना** : इसके अनुसार योजना का निर्मित करने का कार्य प्रारंभ कर देना चाहिए की योजना में जितने काल में जितना कार्य निश्चित किया जा गया है वह समय के साथ पूरा किया जाए।
- **मूल्यांकन**: कार्य के पश्चात उसका मूल्यांकन करना आवश्यक है। यह मूल्यांकन मासिक या त्रैमासिक हो सकता है। इससे कार्य में जहां पर भी कठिनाई आए उसे हल करने के उपाय सोच जा सकते हैं। वहां शारीरिक प्रगति का भी अनुमान लगाया जा सकता है।
- **अनुभवों कों चिन्हित करना**: अंत में कार्य से प्राप्त अनुभव को नोट किया जाना चाहिए इससे भविष्य में कठिनाइयों को सुलझाने में सहायता मिलती है।

बुनियादी शिक्षा में शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए –

- अनुभवी और कुशल अध्यापकों की व्यवस्था।
- वातावरण के अनुकूल एवं उपयुक्त हस्त कौशल का चुनाव।
- स्वाभाविक रूप से समन्वय।
- बालकों की प्राकृतिक शक्तियों के अनुरूप समन्वय।
- सूक्ष्म विषयों के ज्ञान देने में समन्वय प्रणाली का प्रयोग।
- अध्यापकों को आसमान में प्रणाली के प्रयोग के संबंध में आवश्यक प्रशिक्षण देना चाहिए।

उपसंहार

उचित बुनियादी शिक्षा प्राप्त करना भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है । सुखी जीवन जीने के लिए तैयार होने के लिए एक बच्चे के वि कास मेंशिक्षा बेहद महत्वपूर्ण तत्व है । 21 वी सदी में 1986 के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बदलाव जुलाई 2020 में हुआ और यह नई शिक्षा नीति 2020 के रूप में सामने आई ।

संदर्भ सूची

- त्रिपाठी म. (2006) आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा: नई दिल्ली, ओमेगा पब्लिकेशन
- पाठक पी. डी. (2008) भारतीय शिक्षा के आयोग, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन
- पाठक पी. डी. (2009) भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, आगरा, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर
- मिश्र शि. (2006) समय नई तालीम वर्धा, नई तालीम समिति, आश्रम सेवाग्राम
- https://hi.wikipedia.org/wiki_वर्धाशिक्षा_योजना
- https://sarkariguider.com/besik-shiksha-yojana-ke-moolabhoot-siddhaant/